Result Mitra Daily Magazine

लुक ईस्ट एवं एक्ट ईस्ट नीति

❖ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में सिंगापुर एवं भारत के बीच मंत्रिस्तरीय गोलमेज बैठक का दूसरा दौर संपन्न हुआ।
- यह बैठक प्रधानमंत्री श्री मोदी के 2 ASEAN देशों सिंगापुर और ब्रुनेई के दौरे से ठीक पहले आयोजित किया गया।
- प्रधानमंत्री की ASEAN देशों की यात्रा भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के तहत दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ अपने सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता के दिशा में महत्वपूर्ण होगा।

❖ शीत युद्ध काल में भारत-दक्षिण पूर्व एशिया संबंध :

- चोल और कलिंग साम्राज्य के काल में भारत और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच सभ्यतागत संबंध मजबूत हुए।
- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में रामायण परंपरा की मजबूत जडें भी भारत को इन देशों से सांस्कृतिक संबंध मजबूत करने में मददगार रहे हैं।

Result Mitra

- शीत युद्ध के दौरान भारत ने इन देशों के साथ संबंधों पर विशेष जोर नहीं दिया क्योंकि इस अवधि में ये देश अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधन (SEATO) के हिस्सा बन गए, जिसका संस्थापक सदस्य पाकिस्तान था।
- सैन्य गठबंधनों से दूरी बनाए रखने की भारतीय घोषित नीति ने इसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से दूर रखा।
- इसके अलावा शीत-युद्ध के दूसरे चरण में भारत-सोवियत संघ के रिश्ते मजबूत हुए, जिससे स्वाभाविक रूप से ही भारत इन देशों से दूर होता गया।

❖ सोवियत संघ का विघटन :

- 1991 में जब सोवियत संघ का विघटन हुआ तो एशिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में इसने भारत को सबसे ज्यादा प्रभावित किया।
- अराजकता भरे अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में भारत ने एक महाशक्ति सहयोगी (सोवियत संघ) खो दिया।
- भारत के लिये उस समय अमेरिका के साथ मिलकर काम करना संभव नहीं था क्योंकि स्वयं भारतीय जनता के मन में अमेरिका के नीतियों के प्रति संदेह था।
- इसके अलावा नेहरूवादी वैश्विक दृष्टिकोण ने भी भारत को अमेरिका एवं अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी विश्व तक पहुँच बनाने में बाधक का कार्य किया।

❖ लुक ईस्ट नीति :

- तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव को 1991 में सत्ता संभालने के बाद उलझन भरी स्थिति विरासत में प्राप्त हुई।
- हालांकि उन्होंने घरेलू एवं विदेशी नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव किए एवं नवउदारवादी नीतियों को तरजीह दिया।
- उनके समय में भारत ने पश्चिमी देशों और USA के प्रति झुकाव दिखाना शुरू किया।
- इसी संदर्भ में भारत की 'लुक-ईस्ट नीति' 1992 में तैयार की गई थी।

Result Mitra

- इस नीति का घोषित उद्देश्य भारत एवं दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच संबंधों को सुधारना तथा भारत को चीन के प्रतिपक्ष के रूप में स्थापित करना था क्योंकि चीन कई दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिये खतरा बनते जा रहा था।
- वैसे इस नीति का मुख्य शुरूआती उद्देश्य आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना था लेकिन चीन-दक्षिण पूर्व देशों के संबंध में इसमें नया आयाम जोड दिया।

❖ नीति का क्रियान्वयन :

- भारत 1992 में क्षेत्रीय वार्ता भागीदार के रूप में ASEAN में शामिल हुआ।
- 1996 में भारत ASEAN का पूर्ण वार्ता भागीदार और ASEAN क्षेत्रीय मंच (ARF) का सदस्य बना।
- 2005 से भारत ने पूर्वी एशियाई शिखर सम्मेलन (EAS) में भाग लेना शुरू किया।
- 2010 में भारत ASEAN रक्षा मंत्रियों की बैठक प्लस में एक वार्ता भागीदार बना।

❖ गुजराल सिद्धांत :

- इन्द्र कुमार गुजराल ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में नरसिम्हा राव के 'लुक ईस्ट' नीति को आगे बढाते हुए भारत के पडोसी देशों के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया, जिसे 'गुजराल सिद्धांत' के नाम से जाना गया।
- इसकी घोषणा 1996 में की गई, जिसमें 5 बुनियादी सिद्धांत शामिल थे-
- भारत नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव एवं श्रीलंका के साथ विश्वसनीय संबंध स्थापित करेगा, उन्हें मदद प्रदान करेगा एवं बदले में कुछ हासिल करने की अपेक्षा नहीं रखेगा।
- ये देश क्षेत्र में किसी अन्य देश के हितों को नुकसान पहुँचाने के लिये अपने क्षेत्र का इस्तेमाल नहीं करने देंगे।
- कोई देश किसी दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।
- ये सभी देश एक-दूसरे की संप्रभुता एवं अखंडता का सम्मान करेंगे।

Result Mitra

- देशों द्वारा सभी विवादों का निपटारा शांतिपूर्ण ढंग से द्विपक्षीय वार्ता से सुलझाऐंगे।

❖ एक्ट ईस्ट नीति :

- इसकी शुरूआत 2014 में मोदी के काल में हुआ, जो "लुक ईस्ट नीति' का विकसित मॉडल है।
- इस नीति के तहत भारत ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र के साथ आर्थिक, सामरिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान दिया।
- इस नीति ने भारत को उन देशों के साथ संबंध मजबूत करने का अवसर दिया, जो चीन की बढती सैन्य एवं आर्थिक ताकत से चिंतित थे।
- इस नीति के तहत भारत ने इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम, जापान, दक्षिण कोरिया एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ रणनीतिक साझेदारी स्थापित की।
- इस नीति में समुद्री सुरक्षा का विशेष महत्व है, जो चीन के आधिपत्यपूर्ण व्यवहार (दक्षिणी चीन सागर) एवं समुद्री डाकुओं के कारण चिंता का विषय है।

❖ एक्ट ईस्ट नीति और पूर्वोत्तर :

- इस नीति में सुरक्षा के साथ-साथ कनेक्टिविटी पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- कनेक्टिविटी बढाने के मामले में भारत के पूर्वोत्तर को विशेष तरजीह दी जा रही है।
- कलादान प्रोजेक्ट (पूर्वोत्तर-म्यांमार-थाइलैंड को जोडने वाली त्रिपक्षीय राजमार्ग प्रोजेक्ट), बांग्लादेश के साथ जलमार्ग परिवहन एवं अगरतला-अखौरा रेलमार्ग लिंक इस दिशा में महत्वपूर्ण है।

Result Mitra